भारतीय संगीत में ग्रामः एक अध्ययन

डॉ. मनीष डंगवाल
ऐसोसिएट प्रोफेसर व विभाग प्रभारी
संगीत विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
(श्रीदेवसुमन विश्वविद्यालय कैम्पस कॉलेज),
गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखण्ड

१. प्रस्तावना

भारतीय संगीत में नाद से श्रुति, श्रुति से स्वर तथा स्वर से स्वर–सप्तक अर्थात् 'ग्राम' की उत्पत्ति मानी गई है। विद्वानों के मतानुसार सात स्वरों का क्रमानुगत रूप ही **'ग्राम'** या **'स्वर – सप्तक'** कहलाता है। भाारतीय संगीत में ग्राम का उपयोग विभिन्न स्वरावलियाँ, जिन्हें 'मूर्च्छना' कहा जाता है, प्राप्त करने के लिए होता है जिनका प्रयोग गायन–वादन के लिए किया जाता है। ग्राम के प्रत्येक स्वर को आरम्भिक स्वर मानकर, अगले सात स्वरो का आरोह–अवरोह करना ही **'मूर्च्छना'** कहलाता है। प्राचीन कालीन संगीत में–षड्ज ग्राम, मध्यम ग्राम तथा गान्धार ग्राम, तीन ग्राम प्रचलित रहे हैं। इन सभी ग्रामों में सात स्वरों की स्थापना, बाईस श्रुतियों पर, भिन्न –भिन्न प्रकार व क्रम से बताई गई है। इस प्रकार तीन ग्रामों के सात–सात स्वरों से, कुल इक्कीस मूर्च्छनाएँ प्राप्त होती हैं।

२. ग्राम–व्याख्या व स्वरूप

'ग्राम' एक पारिभाषिक शब्द है जिसकी उत्पत्ति 'ग्रस्' धातु में 'मन्' प्रत्यय लगाने से हुई है। इसका शाब्दिक अर्थ है गाँव, वंशावली, जाति, किन्हीं वस्तु विशेष का समुच्चय या समूह जैसे– गुण ग्राम, इन्द्रियग्राम आदि। परंतु संगीत में 'गाम' का अर्थ – स्वरों का एक व्यवस्थित समूह है जिसकी तुलना पाश्चात्य संगीत के "Scale" शब्द से की जा सकती है। Scale या ग्राम दोनों को ही गाया नहीं जाता किन्तु उनसे अनेक "Modes" या 'जातियों' की उत्पत्ति कर, उनका गायन वादन किया जाता है।

'ग्राम' एक ऐसा स्वर–समूह है जिस पर संगीत मात्र आश्रित है। संगीत स्वर, लय तथा पद का सम्मिलित रूप है। स्वर संगीत का प्राण है। स्वरों की प्राप्ति मनुष्य को एक साथ नहीं हुई। जब विभिन्न स्रोतों से एक–एक कर सात स्वर प्राप्त हुए तब उन्हें क्रमबद्ध कर, संजो कर रखने व व्यवस्थित करने की आवश्यकता हुई अतः एक से ऊँचा एक अथवा ऊँचे से नीचे के क्रम के स्वरों को व्यवस्थित किया गया। जब लक्ष्य अर्थात् संगीत के प्रायोगिक पक्ष को सुरक्षित रखने के लिए **लक्षण** अर्थात् शास्त्रीय पक्ष की सृजना प्रारम्भ हुई तब स्वरों के इस संग्रहित रूप को ही **ग्राम** शब्द से संबोधित किया गया।

किसी भी सभ्यता या संस्कृति के संगीत का आधार कोई विशिष्ट स्वर समूह होता है जिसे ग्राम कहा जा सकता हैं। प्रायः सभी प्राचीन सभ्यताओं के आरम्भिक संगीत के न्यूनतक पांच स्वरों का आधार स्वर–समूह प्राप्त होता है। उदाहरण स्वरूप चीनी संगीत का प्राचीन "Scale" या 'ग्राम' पांच स्वरों– कुंग, शैंग, चिआओ, चिह तथा यू, का था जो आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के 'भूपाली' राग के समान था। इसी प्रकार दक्षिण पूर्वी–एशियाई सभ्यता में भी पांच स्वर युक्त दो 'ग्राम' प्रचलित थे – पी लॉग तथा स्लैंड्रॉ। 'पी लॉग' ग्राम के स्वर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के राग 'गुणकली' (सं ध प म रे स) के समान थे, जबकि स्लैंड्रॉ के स्वर राग 'मधमाद सारंग' (सं नि प म रे स) के समान थे। इसी प्रकार प्राचीन ग्रीक सभ्यता में भी पाँच स्वरों का ही सांगीतिक 'ग्राम' प्राप्त होता है जो हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के गुणकली

राग के समान था। बाद में प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने 'कोमल ग' तथा 'कोमल नि' स्वरों को इस ग्राम में सम्मिलित कर, उसे सम्पूर्ण कर दिया। इस प्रकार जो ग्राम प्राप्त हुआ वह हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के 'भैरवी' राग के समान था।

भारतीय सभ्यता के प्रारम्भिक काल– वैदिक काल में भी प्रारम्भ में पांच युक्त स्वर 'ग्राम' प्राप्त होता है – म ग रे स ध। यह 'ग्राम' आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के राग 'अभोगी' के समान माना गया है। इसी ग्राम में, बाद में 'नि' तथा 'प' स्वरों को भी सम्मिलित कर लिया गया। इस प्रकार प्राप्त ग्राम हिन्दुस्तानी संगीत के 'काफी' मेल के समान था। इससे ज्ञात होता है कि प्रायः सभी प्राचीन सभ्यताओं में आरम्भ में पांच स्वरों का ही आधार 'ग्राम' प्रचलित था जो कालांतर में सात स्वर युक्त हो गया। प्राचीन व मध्यकालीन भारतीय सभ्यता में इसी सात स्वर युक्त ग्राम के तीन प्रकार प्रचलित रहे।

३. नारद मुनिकृत नारदीय शिक्षा कालः

भारतीय संगीत के उपलब्ध प्राचीनतम् ग्रन्थ, 8वीं शताब्दी ईसापूर्व से 5वीं शताब्दी ईसापूर्व में नारद मुनि द्वारा रचित नारदीय शिक्षा में उल्लिखित ग्राम विषयक तथ्यों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उत्तर–वैदिक काल में ग्राम संबन्धी प्रारम्भिक तत्व विद्यमान रहे हैं व ग्राम प्रचलित रहे हैं। नारदीय शिक्षाकार नारद मुनि ने स्वर–मण्डल के अन्तर्गत स्वर, मूर्च्छना व तान के अतिरिक्त तीन ग्रामों की गणना की है–

सप्तस्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छनास्त्वेक विंशतिः।
ताना एकोन पञ्चाश–दित्येतत्स्वर मण्डलम्।।

स्वरमण्डल के अन्तर्गत तीन ग्रामों का उल्लेख करने के पश्चात् शिक्षाकार ने तीनों ग्रामों के नाम तथा उनकी विभिन्न लोकों से उत्पत्ति का वर्णन किया है –

षड्ज–मध्यम–गान्धारा स्त्रयोग्रामाः प्रकीर्तिताः।
भूर्लोकाज्जायते षड्जो भुवर्लोकाच्च मध्यमः।।
स्वर्गान्नान्यत्र गान्धारो नारदस्य मतं यथा।

अर्थात् षड्ज, मध्यम व गान्धार तीन ग्राम प्रसिद्ध हैं। षड्ज भू लोक में तथा मध्यम भुवः लोक में उत्पन्न होता है तथा गान्धार स्वर्ग के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं हैं, जैसा कि नारद का मत है। शिक्षाकार के इस कथन से संकेत प्राप्त होता है कि उनके समय तक गान्धार ग्राम विलुप्त हो चुका था तथा षड्ज व मध्यम ग्राम ही प्रचार में रहे होंगे –

सोमस्य पंचमस्यापि दैवतं ब्रह्मराट् स्मृतम्।
निर्हासो यश्चवृद्धिश्च ग्राममासाद्य सोमवत्।
तस्मादस्य स्वरस्यापि धैवतत्वं विधीयते।।

इस मत में शिक्षाकार ने ग्राम के अन्तर्गत पंचम व धैवत स्वरों में होने वाले ह्रास व वृद्धि का वर्णन किया है। शिक्षाकारोक्त पंचम व धैवत स्वरों की ह्रास व वृद्धि से संकेत प्राप्त होता है कि उन्होंने यहाँ षड्ज एवं मध्यम ग्रामीय पंचम व धैवत का सम्मिलित रूप से उल्लेख कर दिया है।

४. भरत मुनि का ग्राम उल्लेख

दूसरी शताब्दी ईसापूर्व से प्रथम शताब्दी ईसवीय के मध्य भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र ग्रन्थ में 'ग्राम' को परिभाषित नहीं किया है तथापि उन्होंने बाईस श्रुतियों एवं सप्त स्वरों पर आधारित– दो ग्रामों का वर्णन किया है। भरत मुति के अनुसार गान्धर्व के अंतर्गत दो ग्राम हैं– षड्ज ग्राम व मध्यम ग्राम। भरत मुनि के पूर्ववर्ती व परवर्ती विद्वार गान्धर्व के अन्तर्गत तीन ग्राम– षड्ज ग्राम, मध्यम ग्राम तथा गान्धार ग्राम का वर्णन करते हैं। यद्यपि भरत मुनि स्वरमण्डल के अन्तर्गत सात स्वर, तीन ग्राम, इक्कीस मूच्छना तथा उनन्चास तानों का उल्लेख करते हैं तथापि उन्होंने षड्ज तथा मध्यम ग्रामों का पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया है परन्तु गान्धार ग्राम का नामोल्लेख ही किया है। सम्भवतः इस काल तक गान्धार ग्राम पूर्णतया लुप्त हो चुका था। नाट्यशास्त्र के पूर्ववर्ती ग्रन्थ–नारदीय शिक्षा में भी कहा गया है कि गान्धार ग्राम स्वर्ग के अतिरिक्त अन्यत्र प्रचलित नहीं है। भरत मुनि ने षड्ज तथा मध्यम ग्रामों का सविस्तार एवं व्यवस्थित रूप

में वर्णन किया है। परवर्ती सभी विद्वानों ने इन ग्रामों के विषय में पूर्णतः भरत मुनी का ही अनुसरण किया है। भरत मुनि षड्ज ग्राम में श्रुति–स्वर विभाजन इस प्रकार बताते हैं–

तिस्रो द्वे च चतस्रिच्श्र चतस्रस्तिस्र एव च।
द्वे चतसच्श्र षड्जाख्ये ग्रामे श्रुतिनिदर्शनम।।

अर्थात् षड्ज ग्राम में (मध्य स्थानीय षड्ज से आगे, तार स्थानीय षड्ज तक) तीन, दो, चार, चार, तीन, दो तथा चार इस प्रकार श्रुति निर्देश है। भरत मुनि ने प्रत्येक स्वर की श्रुतियों का भी उल्लेख किया है –

षड्जचतुश्रुजिज्ञेयःऋशभस्त्रिःश्रुतिः स्मृतः।
द्विश्रुतिश्चापि गान्धारो मध्यमश्च चतुः श्रुतिः।।
चतुः श्रुतिः पंचमः स्यात् त्रिः श्रुतिर्धैवतस्तथा।
द्विश्रुतिस्तु निशादः स्यात् षड्जग्रामे स्वरान्तरे।।

तात्पर्य यह कि षड्ज की चार, ऋषभ की तीन, गान्धार की दो, मध्यम की चार, पंचम की चार, धैवत की तीन तथा निषाद की दो श्रुतियाँ है। षड्ज ग्राम में ऐसा स्वरान्तर है। यह भरत मुनि का शुद्ध स्वर–सप्तक अथवा ग्राम है।

यद्यपि नाट्यशास्त्र में यह स्पष्ट उल्लेख नहीं है कि स्वरों की शुद्धावस्था, उनकी आरम्भिक श्रुतियों पर मानी गई अथवा अंतिम श्रुति पर तथापि 'साधारण' स्वरोल्लेख से इस शंका का समाधान हो जाता है। साधारण नामक विशिष्ट स्वर–विधि के अन्तर्गत, भरत मुनी ने गान्धार व निषाद स्वरों को दो–दो श्रुति उत्कर्ष (चढ़ाने) करने के लिए कहा है। इस प्रकार उत्कृष्ट गान्धार व निषाद क्रमशः अंतर गान्धार व काकली निषाद कहलाते हैं। भरत मुनि के अनुसार षड्ज की दो श्रुतियाँ ग्रहण कर लेने पर निषाद, षड्ज नहीं कहलाता तथा मध्यम की दो श्रुतियाँ ग्रहण करने पर गान्धार भी, मध्यम नहीं कहलाता।

यदि भरतोक्त शुद्ध स्वरों को उनकी प्रथम श्रुतियों पर स्थित माना जाए तब गान्धार व निषाद को दो–दो श्रुत्युत्कर्ष करने पर, वे क्रमशः मध्यम व षड्ज स्वरों की श्रुतियों में प्रवेश कर जाते जिसके फल स्वरूप नवीन स्वर प्राप्त नहीं होता तथा 'साधारण विधि' असफल हो जाती। इस प्रकार ज्ञात होता है कि भरत मुनि ने स्वरों की शुद्धावस्था अन्तिम श्रुति पर मानी है।

मध्यम ग्राम का विषयोल्लेख करते हुए भरत मुनि ने कहा है कि षड्ज ग्राम में पंचम स्वर को एक श्रुति अपकर्ष करने पर मध्यम ग्राम की प्राप्ति हो जाती है–

मध्यमग्रामे तु पंचमः श्रुत्यपकृश्टः कार्यः।

भरतोक्त षड्ज व मध्यम ग्रामों में, स्वरों में निहित श्रतियाँ निम्न अनुसार हैं–

षड्ज ग्राम – षड्ज की चार, ऋषभ की तीन, गान्धार की दो, मध्यम की चार, पंचम की चार, धैवत की तीन, निषाद की दो।
मध्यम ग्राम – षड्ज की चार, ऋषभ की तीन, गान्धार की दो, मध्यम की चार, पंचम की तीन, धैवत की चार, निषाद की दो।
इस प्रकार ज्ञात होता है कि षड्ज व मध्यम ग्रामों के मूल भेद पंचम एवं धैवत स्वरों का है। जहाँ षड्ज ग्राम में पंचम व धैवत की क्रमशः चार व तीन श्रुतियाँ हैं वहीं मध्यम ग्राम में पंचम व धैवत की, क्रमशः तीन व चार श्रुतियाँ हैं। भरतोक्त षड्ज तथा मध्यम ग्राम में स्वरों की बाईस श्रुतियों पर स्थिति को निम्नानुसार समझा जा सकता है –
षड्ज ग्राम षड्ज–4, ऋषभ–7, गान्धार–9, मध्यम–13, पंचम–17, धैवत–20, निषाद–22
मध्यम ग्राम षड्ज–4, ऋषभ–7, गान्धार–9, मध्यम–13, पंचम–16, धैवत–20, निषाद–22
यहाँ यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि षड्ज ग्राम तथा मध्यम ग्राम की श्रुतियों के उपरोक्त तुलनात्मक वर्णन, सहजता से समझने के लिए षड्ज स्वर से प्रारम्भ किया गया है। वास्तविक स्थिति में षड्ज ग्राम का प्रारम्भिक स्वर षड्ज है वहीं मध्यम ग्राम का प्रारम्भिक स्वर मध्यम है।

प्रमाण श्रुति –

भरत मुनि ने स्वोल्लिखित षड्ज तथा मध्यम ग्रामों के पंचम स्वर के श्रुत्यान्तर को, 'प्रमाण श्रुति' संज्ञा दी है। इस विषय में उनका कथन है –

षड्जग्रामे तु श्रुत्यपकृष्टः पञ्चमः कार्य्यः।
पञ्चमश्रुत्युत्कर्षादपकर्षाद्वायदन्तरं मार्दवायतत्वाद् वा तत्प्रमाणश्रुतिः।।

अर्थात् षड्ज ग्राम में पंचम को (एक) श्रुति अपकृष्ट (उतार) करना चाहिए। पंचम की श्रुति उत्कर्ष (चढ़ाने) या अपकर्ष (उतारने) अथवा मार्दव (त्यागने) या आयतत्व (ग्रहण करने) से जो अंतर (परिलक्षित होता या दिखता) है वह 'प्रमाण श्रुति' है। तात्पर्य यह कि पंचम स्वर को उतारने या चढ़ाने पर उसमें दिखने वाला श्रुत्यांतर **'प्रमाण श्रुति'** कहलाता है। सभी परवर्ती विद्वानों ने षड्ज व मध्यम ग्रामों का सम्पूर्ण वर्णन भरत मुनि के समान ही किया है।

५. मतंग मुनि का ग्राम उल्लेख

भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र ग्रन्थ में 'ग्राम' विषय पर विषद चर्चा की है परन्तु ग्राम की व्याख्या, सर्वप्रथम 6ठी शताब्दी ईसवीय में मतंग मुनि ने प्रस्तुत की है –

समूहवाचिनौ ग्रामौ स्वरश्रुत्यादिसंयुतौ।।
यथा कुटुम्बिनः सर्व एकीभूत्वा वसन्ति हि।
सर्वलोकेशु स ग्रामौ यत्र नित्यं व्यवस्थिति।।

अर्थात् ग्राम समूहवाची (शब्द) है, (इसमें) स्वर, श्रुति आदि संयुक्त रूप से रहते हैं। जैसे, जहाँ सभी कुटुम्बीजन एकत्रित व नित्य व्यवस्थित होकर रहते हैं, वह सभी लोकों में ग्राम कहलाता है। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार विभिन्न मानुषी–परिवारों के सम्मिलित एवं व्यवस्थित आवासीय समूहों को 'ग्राम' कहा जाता है उसी प्रकार स्वर एवं श्रुति के व्यवस्थित रूप तथा मूर्च्छना आदि के आश्रय को संगीत में 'ग्राम' कहा जाता है। भरत मुनि के समान ही मतंग मुनि ने दो ग्रामों षड्ज तथा मध्यम को ही प्रचलित माना है परंतु मतंग मुनि ने गान्धार ग्राम का भी नामोल्लेख किया है तथा कहा है कि वह मर्त्यलोक (भौतिक जगत) में प्रचलित नहीं हैं –

षड्जमध्यमसंज्ञौ तु द्वौ ग्रामौ विश्रुतौ किल।
गान्धारं नारदो ब्रूते स तु मर्त्येन् गीयते।।

मतंग मुनिकृत बृहदेशी ग्रन्थ के अन्तर्गत, संगीत में ग्राम के प्रयोजन तथा आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया है –

प्रयोजनं च यथा–स्वरश्रुतिमूर्च्छना–तानजातिरागाणां व्यवस्थापनत्वं नाम प्रयोजनम्।

अर्थात् ग्राम का प्रयोजन स्वर, श्रुति, मूर्च्छना, तान, जाति तथा रागों को व्यवस्थित करना है। इसके अतिरिक्त मतंग मुनि ने ग्रामों का नामकरण–षड्ज, मध्यम व गान्धार करने का कारण भी बताया है–

उच्यते–असाधारणत्वेन ताभ्यां ग्रामण्योपदेशः। असाधारणत्वं च देवकुलसमुत्पन्नत्वेन।

अर्थात् ऐसा इन ग्रामों के असाधारणत्व के कारण है तथा यह असाधारणत्व उनका देव कुल में उत्पन्न होना है। मतंग मुनि ने दोनों प्रचलित ग्रामों में से षड्ज को प्रमुख ग्राम माना है तथा कहा है कि ऐसा भरत मुनि का वचन है –

षड्जस्यैव हि मुख्यत्वं गम्यते वचनान्मुनेः।।

६. नारद का ग्राम उल्लेख

मतंग मुनि ने षड्ज ग्राम तथा मध्यम ग्राम के विषय में शेष सम्पूर्ण वर्णन भरत मुनि के समान प्रस्तुत किया है। बृहदेशी के पश्चात् 8वीं शताब्दी ईसवीय में संगीत मकरंद के रचयिता नारद ने ग्राम को परिभाषित करते हुए कहा है –

ग्रामः स्वरसमूहः स्यान्मूर्च्छना तु स्वराश्रया।

अर्थात् ग्राम (ऐसा) स्वरसमूह है जो मूर्च्छना व स्वर का आश्रय है। संगीत मकरंद ग्रन्थ में ग्राम विषयक विशिष्ट सामग्री प्राप्त होती है। इस ग्रन्थ में मकरंदकार नारद ने तीनों ग्रामों का नामोल्लेख करके, पूर्ववर्ती

आचार्यो के समान कहा है कि गान्धार ग्राम पृथ्वी पर प्रचलित नहीं है किन्तु मकरंदकार नारद ने इस ग्रन्थ में गान्धार ग्राम का भी स्वरूप वर्णन किया है। मकरंदकार का गान्धार ग्राम के विषय में कथन है –

यदाधास्त्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुति।
रिमयोः श्रुतिरेकैका गान्धारस्य समाश्रया।।
पंचमश्रुतिरेका च निशादश्रुतिसंश्रया।
गान्धारग्राममाचाष्टे तदा तं नारदोऽब्रवीत्।। इदं लक्षणं ब्रह्मणोक्तम्।।

मकरंदकारोक्त यह वर्णन कुछ अपूर्ण तथा अस्पष्ट प्रतीत होता है। इस विषय पर डॉ0 एम0 विजयलक्ष्मी का कथन है –

'यदा धास्त्रिश्रुति षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुति।

This is the general order of the notes 'Sa' and 'Ma' with four Shrutis and 'Dha' three Shrutis.

रिमयोः श्रुतिरेकैका गान्धारस्य समाश्रया।।

Here the author takes one Shruti from 'Ri' and 'Ma' each and allocates them to Gandhar…. .....

पंचमश्रुतिरेका च निषाद श्रुतिसंश्रया।
गांधारग्राममाचष्टे तदा तं नारदोऽब्रवीत्।

Narada Says that Nishada takes one Shruti from 'Panchama' which has four Shrutis. In the above sloka nothing has been explained about Shadja of Gandhara Grama, which has only three Shrutis in the 'Ga.

इस प्रकार डॉ0 विजयलक्ष्मी बताती हैं कि इस गान्धार ग्रामिक वर्णन में षड्ज स्वर के विषय में कुछ नहीं कहा गया है। मकरंदकार ने यह भी स्पष्ट नहीं किया है कि पंचम की एक श्रुति निषाद ने किस प्रकार ग्रहण की जबकि दोनों स्वरों के मध्य धैवत स्वर भी स्थित है।

७. नान्यभूपालकृत भरत भाष्यम् कालः

11 वीं शताब्दी ईसवीय में नान्यभूपाल ने भरत भाष्यम् ग्रन्थ में ग्राम की बहुत स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की है। उनके अनुसार श्रुति के उत्कर्ष एवं अपकर्ष से जब किसी स्वर की प्रधानता हो जाती है तब यही –'ग्राम' कहलाता है–

एषां मध्ये श्रुत्युत्कर्षापकर्षवान् स्वर–विशेष–प्रधानभूत–स्वरोपचितो ग्रामः इत्युच्यते।

तात्पर्य यह है कि जब क्रमिक रूप से सभी स्वर व्यवस्थित होते हैं तब उनमें से किन्हीं स्वरों को, उनके श्रुति–स्थानों से उतारने या चढ़ाने पर नवीन 'ग्राम' की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार नान्यभूपाल ने इस तथ्य को इंगित किया है कि किसी पूर्व प्राप्त ग्राम के स्वरों के निर्धारित श्रुति–स्थानों में परिवर्तन करने पर वह ग्राम भी परिवर्तित हो जाएगा। नान्यभूपाल ने मकरंदकार के समान तीन ग्रामों पर विस्तृत चर्चा की है। तीनों ग्रामों के स्वरों के विषय में उनका कथन है –

षड्जर्षभ–गान्धार–माध्यम–पंचम–धैवतैः सनिषादैः।
क्रमते षड्जग्रामोभि .....।।
म–प–ध–नि–सरि–गैरेवं–क्रम गीतैः स्याच्च मध्यग्रामः।
ग–म–प–ध–नि–स–रित्येवं गान्धारग्राममाह नान्यपतिः।।

तात्पर्य यह कि षड्ज ग्राम में क्रमशः षड्ज ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत व निषाद स्वर विद्यमान रहते हैं। मध्यम ग्राम में –म, प, ध, नि, स, रि व ग स्वर क्रम से गाए जाते हैं तथा गान्धार ग्राम में –ग, म, प, ध, नि, स व रि स्वर विद्यमान हैं। नान्यभूपाल के अनुसार अतितारत्व व अतिमन्द्रत्व से होने वाले वैस्वर्य के कारण, भरत मुनि ने गान्धार ग्राम का उपदेश न करते हुए केवल षड्ज व मध्यम ग्रामों का उल्लेख किया है

द्वौ ग्रामौ भरतेनोक्तौ ग्रामो गान्धार–पूर्वक।
अतितारातिमन्द्रत्वाद् वैस्वर्यः नोपदर्शितः।।,

इसके पश्चात् नान्यभूपाल ने षड्ज तथा मध्यम ग्रामों का स्वरूप वर्णन, भरत मुनि के समान प्रस्तुत किया है तथा गान्धार ग्राम का वर्णन, मकरंदकार नारद के समान दिया है।

८. पं. शार्ङ्गदेव का ग्राम उल्लेख

12वीं शताब्दी ईसवीय में संगीत रत्नाकर ग्रन्थ में गान्धार ग्राम का ठीक–ठीक वर्णन प्राप्त होता है। यद्यपि स्वयं पं0 शार्ङ्गदेव ने केवल षड्ज व मध्यम ग्राम प्रचलित माने हैं तथापि उन्होंने गान्धार ग्राम का भी वर्णन किया है तथा कहा है कि ऐसा नारद ने बताया है। निस्सन्देह यहाँ पं0 शार्ङ्गदेव ने मकरंदकार नारद के मत का ही उल्लेख किया है क्योंकि गान्धार ग्राम पर विस्तृत चर्चा मकरंदकार नारद ने ही की है। संगीत रत्नाकार में गान्धार ग्राम का वर्णन इस प्रकार दिया गया है –

यद्वा धस्त्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुतिः।
रिमयो श्रुतिरैकैका गान्धारश्चेत् समाश्रितः।।
प श्रुति धो निषादस्तु ध श्रुति स श्रुतिश्रितः।
गान्धार ग्राममाचेष्टे तदा तं नारदो मुनिः।।

इस वर्णन में प्रथम दो पंक्तियाँ पूर्णतः संगीत मकरंद से उद्धत कर ली गई हैं परंतु तृतीय पंक्ति में में कहा गया है कि 'प' की (एक) श्रुति 'ध' ने ले ली तथा निषाद ने (एक) श्रुति 'ध' से ले ली तथा एक श्रुति 'स' से भी ले ली। पं0 शार्ङ्गदेव के अनुसार ऐसा नारद मुनि ने कहा है। गान्धार ग्राम के इस वर्णन से ज्ञात होता है कि नारद वर्णित गान्धार ग्राम में गान्धार व निषाद स्वरों की चार–चार श्रुतियाँ हैंः षड्ज, मध्यम, पंचम एवं धैवत की तीन–तीन तथा ऋषभ की दो ही है – ग–4, म–3, प–3, ध–3, नि–4, स–3, रे–2।
पं0 शार्ङ्गदेव ने भी अपने पूर्वाचार्यो के समान ही षड्ज तथा मध्यम ग्राम का वर्णन किया है। यद्यपि उन्होंने केवल इन्हीं दो ग्रामों को प्रचलित माना है तथापि मकरंदकार के समान ही गान्धार ग्राम का वर्णन भी किया है।

12वीं शताब्दी ईसवीय के पश्चात् मुस्लिम संस्कृतियों के अतिशय संक्रमण के कारण भारतीय सांगीतिक ग्रन्थों में से 'ग्राम' का लोप हो गया। इस काल के पश्चात् ग्राम का कुछ ग्रन्थों में केवल उल्लेख मात्र प्राप्त होता है जो संगीत रत्नाकर की परम्परा को जीवित रखने का प्रयास मात्र प्रतीत होता है।

९. सारांश

भारतीय संगीत के ऐतिहासिक क्रम का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि स्वरों के विकास क्रम में अथवा उसके पूर्ण विकसित होते ही 'ग्राम' शब्द का प्रचलन आरम्भ नहीं हुआ अपितु उसका प्रचार बहुत बाद में हुआ। यद्यपि 'ग्राम' अर्थात् एक निश्चित स्वर समूह के अस्तित्व तथा उसके प्रयोग के अनेक प्रमाण, वैदिक काल में ही प्राप्त हो जाते हैं। तथापि 'ग्राम' या उसके पर्यायवाची शब्द का प्रयोग, संगीत में शिक्षा ग्रन्थ काल से पूर्व प्राप्त नहीं होता। सर्वप्रथम शिक्षा कालीन '**नारदीय शिक्षा**' ग्रन्थ में ही 'ग्राम' शब्द का, संगीत के अन्तर्गत प्रयोग हुआ है। शिक्षा ग्रन्थ काल तक ग्राम व्यवस्था तथा उनपर आश्रित मूर्च्छनाओं का प्रचार–प्रसार हो चुका था किन्तु नारदीय शिक्षा ग्रन्थ के प्रमाणों से आभास होता है कि षड्ज व मध्यम ग्राम का पूर्ण भान तत्कालीन समाज को था। जबकि गान्धार ग्राम विलुप्त हो चुका था।

भरत मुनि काल तक नाट्य के अन्तर्गत षड्ज व मध्यम ग्रामों तथा उनके सम्पूर्ण लक्षणों का ज्ञान तत्कालीन समाज को हो चुका था तथा वे लक्षण पूर्ण रूपेण स्थापित हो चुके थे जो कालान्तर में भी वैसे ही ग्रहण किए गए।

8 वीं शताब्दी ई0 तथा 11 वीं शताब्दी ई0 के उपलब्ध सांगीतिक ग्रन्थों– संगीत मकरंद व भरत भाष्यम् से संकेत प्राप्त होते हैं कि सम्भवतः उस काल के संगीतज्ञ समाज को तृतीय ग्राम– गान्धार ग्राम व उसके लक्षणों का भी ज्ञान हो चुका था अथवा तत्कालीन संगीत में गान्धार ग्राम को पुनर्जीवित कर लिया गया था। किन्तु 12 वीं शताब्दी तक भारतीय संस्कृति पर बाह्य संस्कृतियों के अतिशय आक्रमणों व संकरणों के कारण भारतीय संगीत की विशिष्ट विधा 'ग्राम' का लोप हो गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. भारतीय संगीत का इतिहास–डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे–चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
२. भारतीय संगीत का इतिहास–डॉ. ठाकुर जयदेव सिंह–संगीत रिसर्च अकादमी, कलकत्ता
३. संगीत बोध–डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे–म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
४. नारदीय शिक्षा –नारद मुनि–भट्ट शोभाकर–श्रीपीताम्बरापीठ सस्कृत परिषद, दतिया
५. नारदीय शिक्षा में संगीत–मनीष डंगवाल–राज पब्लिकेशन, नई दिल्ली
६. नाट्यशास्त्र–भरत मुनि–एम- रामकृष्ण कवि–ओरिएन्टल इंस्टिट्यूट, बड़ौदा
७. नाट्यशास्त्र–भरत मुनि–श्री बाबूलाल शास्त्री–चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
८. बृहद्देशी–मतंग मुनि–बालकृष्ण गर्ग– संगीत कार्यालय, हाथरस
९. संगीत मकरदं –नारद–गायकवार्ड सिरीज
१०. संगीत मकरंद–नारद–लक्ष्मीनारायण गर्ग–संगीत कार्यालय, हाथरस
११. भरत भाष्यम्– नान्यभूपाल–चैतन्य पुण्डरीक देसाई–इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
१२. संगीत रत्नाकर–पं. शार्ङ्गदेव–आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली
१३. Sangita Ratnakara-Sarangadeva-Pt. S.S. Sahtri-The Adyar Library and Research Center, Madras.
१४. Brhaddesi of Matanga Muni-Prem Lata Sharma-I.G.N.C.A., New Delhi.
१५. Nardiya Siksa-Narada Muni-Usha R. Bhise-Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune.
१६. A critical Study of Sangita Makaranda-Dr.(Mrs.) M. Vijay Lakshmi-Gyan Publication House, New Delhi.